विचार बिन्दु

ठोकरें केवल धूल ही उड़ाती हैं, फसलें नहीं उगाती। –टैगोर

फिल्म नीति पर्यटन के नहीं, कला-संस्कृति के केंद्र में हो!

ओटीटी प्लेटफॉर्म, मल्टीप्लेक्स संस्कृति तथा स्मार्टफोन जैसे मनोरंजन के नये माध्यमों के आ जाने से पारंपरिक सिनेमाघरों में दर्शकों की आमद कम हो गई है। राजस्थानी भाषा की फिल्मों को तो पहले भी सिनेमाघर मिलना दूभर रहा है जिस कारण उनके निर्माताओं की यह शिकायत हमेशा बनी रही कि उनकी फिल्में दर्शकों तक पहुंच ही नहीं पाती क्योंकि उन्हें मुख्य धारा की हिन्दी फिल्मों के मुकाबले महंगे सिनेमाघरों की स्क्रीन नहीं मिल पाती। उनकी लंबे समय से मांग रही है कि राज्य सरकार राजस्थानी फिल्मों के निर्माण और प्रदर्शन को बढ़ावा देने के लिए कुछ ठोस कदम उठाये। मगर शासन और राजनेताओं की प्राथमिकताओं में सिनेमा हाशिये पर भी नहीं रहता है। राजस्थानी सिनेमा को बढ़ावा देने का भरोसा देने की रस्म अदायगी तो खूब हुई है जिसके चलते पिछले दशकों में राज्य सरकारों ने अनेक बार फिल्म नीतियां बनाई हैं, किन्तु राजस्थानी सिनेमा को अपनी हैसियत बनाने में उन नीतियों से कभी रत्ती भर भी मदद नहीं मिली है। अब एक बार फिर उप-मुख्यमंत्री दीया कुमारी ने राज्य की नई फिल्म नीति लाने की घोषणा की है जिसे लेकर राजस्थानी भाषा की फिल्मों के निर्माण और व्यवसाय से जुड़े लोगों में हलचल बढ़ गई है। राजस्थान की पहचान उसकी अपनी गहरी सांस्कृतिक विरासत और असाधारण भौगोलिक विविधता के कारण रही है। जयपुर, जोधपुर और बूंदी के स्मारक, उदयपुर की झीलें, जैसलमेर का स्वर्णिम रेगिस्तान, स्थानीय लोगों के परिधान और लोक संगीत दुनिया भर के पर्यटकों को हमेशा ही आकर्षित करते रहे हैं। उन्हें अपने प्रचार के लिए फिल्मों की कोई दरकार नहीं रही है। किन्तु राज्य सरकारें जब भी फिल्म नीति बनाती हैं तो उसे पर्यटन के प्रोत्साहन के औजार के रूप में ही हमेशा प्रस्तुत करती रही हैं। इस बार भी उप-मुख्यमंत्री के बयान से ऐसा ही प्रतीत होता है। राजस्थान में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए फिल्मों के उपयोग को फिल्म नीति कहना केवल सीमित सोच का परिचय देना ही नहीं है, बल्कि वह फिल्म उद्योग के बारे में मूल समझ के अभाव को भी दर्शाता हैं। सत्ता में बैठे लोगों को कौन समझाये कि फिल्मनीति सिर्फ लोकेशन-प्रमोशन का माध्यम नहीं होती हैं; वह एक विचार, एक सृजन और एक संस्कृति का विस्तार होती हैं। राज्य की फिल्म नीति के साथ हमेशा ही यह समस्या रही है कि वह हमेशा टूरिज्म का विस्तार मानकर तैयार की जाती रही है और इस बार भी इससे अलग होने के आसार नज़र नहीं आ रहे हैं। राज्य की फिल्म नीति को कला, संस्कृति, और रचनात्मकता के उद्यम का हिस्सा होना चाहिए। आवश्यकता इस बात की है कि फिल्म नीति में राजस्थान को सिनेमा-उद्योग के केंद्र के रूप में स्थापित करने का खाका तैयार किया जाए, न कि उसे पर्यटन का परिशिष्ट बनाकर छोड़ दिया जाए। फिल्मकारों के लिए अनुकूल वातावरण, स्थानीय प्रतिभाओं के लिए अवसर, रोज़गार एवं आर्थिक गतिविधियों का विस्तार, और संस्कृति एवं कला के संरक्षण और संवर्धन का ढांचा बनाना फिल्म नीति का वास्तविक उद्देश्य होना चाहिए। लेकिन वर्तमान समय में राजस्थान की फिल्म नीति का बड़ा हिस्सा लोकेशन शूटिंग के परमिशन, शुल्क और पर्यटन संबंधी पैकेजों पर केंद्रित रहता है। इसका सबसे बड़ा नुकसान यह होता है कि सरकार फिल्म उद्योग को एक व्यवसाय या क्रिएटिव सेक्टर के रूप में विकसित करने से पूरी तरह चूक जाती है। सचिवालय में बैठे अधिकारियों की सीख पर चलने वाले नीति निर्माताओं ने फिल्मों को सिर्फ पर्यटन बढ़ाने का साधन मान लिया है। पर्यटन को फिल्म नीति का परिणाम तो बनाया जा सकता है, लक्ष्य नहीं। फिल्म नीति में यह विभाजन स्पष्ट करना होगा। फिल्म उद्योग में कला, कौशल, रोजगार, रचनात्मकता शामिल होती है। सिने-पर्यटन उसका सह-उत्पाद हो सकता है।

राजस्थान में फिल्मों की शूटिंग तो खूब हुई, पर स्थानीय फिल्म निर्माण, स्थानीय कलाकारों का विकास, तकनीकी प्रशिक्षण आदि के पहलुओं में प्रगति नहीं हो पाई। इसलिए पर्यटन-केंद्रित सोच से हटकर 'रचनात्मक उद्योग' की दृष्टि से नीति बनाने की पहल करने की जरूरत है। नई फिल्म नीति को पर्यटन विभाग की फाइलों से निकाल कर कला और संस्कृति के तहत लाने की आवश्यकता है क्योंकि फिल्में कला का विस्तार हैं, लोकेशन-गाइड नहीं। लंबे समय से राजस्थान में फिल्म सिटी बनाने की बातें भी होती रही हैं। किन्तु अब यह भी बेमानी हो चुका है। डिजिटल तकनीक के विकास से अब फिल्म सिटी का कॉन्सेप्ट ही समाप्त हो चला है। राजस्थान की शूटिंग लोकेशन भी अब वीएफएक्स के ज़माने में अर्थहीन हो गई है। वास्तव में फिल्म सिटी के नाम पर फिल्म कारोबार से इतर के निजी निवेशक लालायित रहते हैं, जिनकी दिलचस्पी सिनेमा के बजाय रियल एस्टेट अर्थात रियायती दरों पर भूमि पाने और कर रियायतों में ही होती हैं जिसमें उन्हें सीधा मुनाफा दिखता है। इससे वास्तविक फ़िल्मकारों की मदद नहीं होती। राजस्थानी भाषा का साहित्य और यहां की लोक-कथाओं का समृद्ध भंडार किसी भी राज्य से कम नहीं है। बस जरूरतइस बात की है कि राजस्थानी फिल्में बनाने वालों को उस तरफ प्रेरित किया जाए तथा शॉर्ट फिल्म, डॉक्यूमेंट्री और इंडिपेंडेंट सिनेमा के लिए स्पेस तैयार किया जाए। राज्य में स्थानीय कलाकारों, तकनीशियनों और विद्यार्थियों के लिए सिने प्रशिक्षण का कोई कार्यक्रम नहीं है। फिल्म सिटी की बजाय राज्य सरकार को फिल्म इंस्टिट्यूट जैसा कोई अकादमिक संस्थान बनाने का सोचना चाहिए जहां फिल्म, अभिनय, सिनेमैटोग्राफी, पटकथा लेखन, मेकअप, और एडिटिंग की स्किल डेवलपमेंटका प्रशिक्षण की व्यवस्था हो। उसकी पुणे तथा कोलकाता के फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थानों के साथ शैक्षणिक साझेदारी बनाई जा सकती है। अन्य राज्यों की तरह राजस्थान फिल्म विकास निगम भी बनाया जा सकता है, जिसमें सिने कला के असल जानकार लोगों को जोड़कर बेहतर काम किया जा सकता हैं। राजस्थान में कला और संस्कृति का भंडार है। यहां के लोक कलाकार, कथाकार, तथा शिल्पकार विश्व प्रसिद्ध हैं। लेकिन इनको सिनेमा से जोड़ने का सुव्यवस्थित ढांचा नहीं है। फिल्म विकास निगम यह काम कर सकता है। राजस्थान को महाराष्ट्र या बंगाल की तरह अपना क्षेत्रीय फिल्म उद्योग खड़ा करने के लिए राज्य सरकार फिल्म फेस्टिवलों को बढ़ावा देने की पहल भी कर सकती है। जयपुर से बाहर भी राज्य के बड़े शहरों में राजस्थानी भाषा की फिल्मों के फेस्टिवल मनाए जाने के लिए सरकार सक्रिय भागीदारी निभा सकती है। फिल्म फेस्टिवल, मार्केट और क्रिएटिव इकोनॉमी का विस्तार करने के लिए राजस्थान को साल भर चलने वाले फिल्म इवेंट कैलेंडर की जरूरत हैजो फिल्म नीति का एक अहम भाग हो सकता है। राजस्थान को सिनेमा के विश्व-नक्शे पर स्थापित करने की कल्पना भले ही अभी दूर की कौड़ी लगे किन्तु कल्पना की यह उड़ान नई फिल्म नीति का मूल मंत्र होनी चाहिए। राजस्थान की रेत, संगीत, लोक-कथाएं और संस्कृति पहले से ही अमर हैं-अब जरूरत है कि फिल्म नीति उन्हें आधुनिक सिनेमा की दृष्टि से भी उतनी ही मजबूती से स्थापित करे। राजस्थान को लोकेशन नहीं, एक क्रिएटिव सिनेमा सेंटर के रूप में विकसित करने का प्रयास होना चाहिए। राज्य सरकार यदि सही दृष्टि के साथ, पर्यटन से अलग हटकर कला और रचनात्मक उद्योग के विकास पर आधारित फिल्म नीति बनाए, तो राजस्थान न केवल भारत का बल्कि दुनिया का प्रमुख फिल्म हब बन सकता है।

पर्यटन के लिए तो राजस्थान खुद ही अपना ब्रांड है। अब जरूरत है कि फिल्म नीति उसे आधुनिक सिनेमा की दृष्टि से भी उतनी ही मजबूती से स्थापित करे। इसलिए राजस्थान को अपनी भाषा की फिल्मों की जरूरत है जिनमें यहां की कला और संस्कृति दर्ज हो सके तथा युवाओं को रोजगार और कौशल देने वाली क्रिएटिव इकोनॉमी विकसित हो सके।

राजस्थानी फिल्मों को स्थायी और विश्वसनीय प्रदर्शन स्थलों की उपलब्धता सुनिश्चित करना फिल्म नीति की पहली प्राथमिकता होनी चाहिए ताकि दर्शकों को राजस्थानी फिल्मों तक सरल पहुंच मिल सके। यह स्पष्ट है कि राजस्थानी फिल्म निर्माण में कोई बड़ा निवेश नहीं आता है। मुख्य धारा के फिल्म प्रदर्शन स्थल राजस्थानी फिल्मों के निर्माताओं के बूते के बाहर हैं। इसके लिए यदि फिल्म नीति कोई सकारात्मक ठोस कदम की व्यवस्था करे तो वह राजस्थानी फिल्म निर्माण को बहुत बड़ा संबल होगा। इसके लिए बड़े शहरों में सार्वजनिक सभा भवनों, जिला मुख्यालयों पर सूचना केंद्रों के सभागृहों, कला मंडलों, टाउन हॉलों, तथा नगर निगम/नगर पालिका के सामुदायिक केंद्रों में फिल्म प्रोजेक्शन के इंतजाम करके तथा थोड़ी सुविधाएं बढ़ा कर वहां आम दर्शकों के वहन योग्य टिकट दर पर राजस्थानी भाषा में निर्मित फिल्मों के नियमित प्रदर्शन की व्यवस्था की जा सकती है। टिकटिंग व्यवस्था ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों माध्यमों से हो सकती है। टिकट बिक्री से प्राप्त संपूर्ण आय सीधे फिल्म निर्माता अथवा निर्माण करने वाली संस्था को हस्तांतरित की जा सकती है। फिल्म प्रदर्शन की समय-सारिणी का निर्धारण करने के लिए एक फिल्म स्क्रीनिंग कमेटी बनाई जा सकती है। यह पहल क्षेत्रीय सिनेमा उद्योग के पुनर्जीवन की दिशा में एक मौलिक और व्यवहारिक कदम होगी। सरकारी सभागृहों का उपयोग बढ़ने से उनकी सांस्कृतिक उपयोगिता भी बढ़ेगी तथा राजस्थानी फिल्मों को निश्चित और स्थायी प्रदर्शन के लिए मंच मिलेगा। छोटे निर्माताओं को भी सीधी आर्थिक आय प्राप्त होगी, जिससे उद्योग में निवेश बढ़ेगा। युवा कलाकारों, तकनीशियनों और निर्देशकों को स्थायी अवसर मिलेंगे। जब फिल्मों को कला के रूप में देखा जाएगा, तभी यह उद्योग विकसित हो सकता है। राजस्थानी फिल्मों में पारंपरिक संगीत, वाद्य और नृत्य को फिल्मों में शामिल करने को प्रोत्साहन देने की फिल्म नीति में व्यवस्था होनी चाहिए। पर्यटन के लिए तो राजस्थान खुद ही अपना ब्रांड है। अब जरूरत है कि फिल्म नीति उसे आधुनिक सिनेमा की दृष्टि से भी उतनी ही मजबूती से स्थापित करे। इसलिए राजस्थान को अपनी भाषा की फिल्मों की जरूरत है जिनमें यहां की कला और संस्कृति दर्ज हो सके तथा युवाओं को रोजगार और कौशल देने वाली क्रिएटिव इकोनॉमी विकसित हो सके।

-अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

न्याय एवं अधिकार की संकल्पना में अधिवक्ता महत्वपूर्ण कड़ी

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जयंती व अधिवक्ता दिवस विशेष.....

मनोज कुमार

- **आजादी के आंदोलन में अधिवक्ताओं का महत्वपूर्ण स्थान, अनेक स्वतंत्रता सेनानियों को फांसी के फंदे से बचाया**
- **वर्तमान में उपभोक्ता संरक्षण क़ानून से पीड़ित उपभोक्ताओं को त्वरित न्याय दिला रहे हैं**

देश के संविधान की रोशनी में न्यायप्रिय शासन व्यवस्था की चाहत रखने वाले हरेक भारतीय के लिए और विशेष रूप से अधिवक्ताओं के लिए दो दिसम्बर अपने संवैधानिक दायित्व एवं अधिकारों पर मनन करने का दिवस है। देश के प्रथम राष्ट्रपति और प्रख्यात एडवोकेट डॉ. राजेंद्र प्रसाद के जन्मदिवस के मौके पर देशभर में अधिवक्ता दिवस मनाया जाता है।

3 दिसंबर 1884 को जन्में डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने चंपारण सत्याग्रह, नमक सत्याग्रह, भारत छोड़ों आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई और कई बार जेल गए। बहुत कम लोगों को मालूम है कि लाल बहादुर शास्त्री के 'जय जवान-जय किसान' के नारे से एवं डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन की हरित क्रांति से बहुत पहले डॉ. राजेन्द्र प्रसाद देश की अंतरिम सरकार में खाद्य एवं कृषि मंत्री रहते हुए 'अधिक अन्न उगाओ' का नारा दे चुके थे।

कई बार यह सवाल पूछा जाता है कि इस देश में अधिवक्ताओं का इतना सम्मान क्यों है? इसका बड़ा ही सरल सा जवाब है कि भारत की स्वतंत्रता में अधिवक्ताओं का विशेष योगदान रहा है। जितने भी प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी हुए, उनमें से अधिकांश अधिवक्ता ही थे। ये वही अधिवक्ता थे, जिन्होंने असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों की निरूशुल्क पैरवी कर उन्हें तत्कालीन अंग्रेज सरकार के क्रूर फांसी के फंदे से भी बचाया।

अब क्योंकि अंग्रेज सरकार का शासन तो समाप्त हो गया है, लेकिन फिर भी शोषण की प्रवृत्ति अभी भी अवचेतन मन में बची हुई है। इसी कड़ी में उपभोक्ताओं के साथ अनुचित व्यापार-कार्य व्यवहार के फंदे से बचाने में अधिवक्तागण आज भी अपना अहम योगदान दे रहे हैं। यही वजह है कि देश-प्रदेश में उपभोक्ता जागरूकता लगातार बढ़ रही है। अकेले झुंझुनूं जिले में गत 2 वर्ष में ढ़ाई हजार से अधिक प्रकरणों का निस्तारण किया गया है। उपभोक्ताओं को त्वरित न्याय उपलब्ध करवाना तभी सम्भव हो पाया है, जब अधिवक्ताओं ने सकारात्मक रूप से उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम की खूबसूरती को धरातल पर लागू करने में आगे बढ़ कर सहयोग किया है।

दरअसल उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम अपने आप में ऐसा संपूर्ण अधिनियम है जिसके दायरे में हर वो व्यक्ति शामिल है, जिसने वस्तु या सेवा क्रय पर रसीद ली है। इस कानूनी अधिकार के असली नायक/सेनापति का दायित्व अधिवक्ता ही निभाते है,तभी उपभोक्ताओं को न्याय मिल पाना सम्भव हुआ है। साथ ही अधिवक्तागण समय-समय पर उपभोक्ता हितों की पैरवी कर सही मायने में मजबूत लोकतंत्र का अहसास भी करवाते हैं।

वर्तमान समय की कसौटी में मजलूमों, पीड़ित-शोषित को न्याय दिलाने में अधिवक्ता को न्याय व्यवस्था का मेरुदण्ड कहा जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं है। यों कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण न्याय तभी सम्भव है, जब अधिवक्ता की मौजूदगी है। देश की जंग-ए-आजादी में आगे बढ़ कर कुर्बानी देने का गौरवशाली इतिहास अधिवक्ता समुदाय का रहा है। वहीं अनेक स्वतंत्रता सेनानियों को फांसी के फंदों से बचाने में निस्वार्थ रूप से अहम भूमिका भी अधिवक्ताओं ने बखूबी निभाई है और भारतीय संविधान को बनाने में अधिवक्ताओं का अतुलनीय विशेष योगदान रहा है। हमारे देश की लोकतान्त्रिक व्यवस्था की मजबूती व खूबसूरती को उच्चतम मुकाम पर रखने में अधिवक्ता समुदाय का अकल्पनीय कार्य व्यवहार आज भी अंतिम पंक्ति में खडे भारतीय के दिलोदिमाग़ में संविधान व न्याय के प्रति अटूट विश्वास जगाता रहता है। संविधान की पवित्रता से सराबोर विधि एवं न्याय में विश्वास रखने वाले विद्वान अधिवक्ताओं व आमजन को अधिवक्ता दिवस की असीम शुभकामनाएं।

प्यारे मुल्क भारत के प्रथम राष्ट्रपति महान कानूनविज्ञ स्वतंत्रता सेनानी भारत रत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को कोटि-कोटि नमन। वन्दन।।

मनोज कुमार, अध्यक्ष,
उपभोक्ता आयोग, झुंझुनूं

मारवाड़ का ही नहीं, राजस्थान का भी गौरव बढ़ाया था फिल्म अभिनेता 'सज्जन' ने

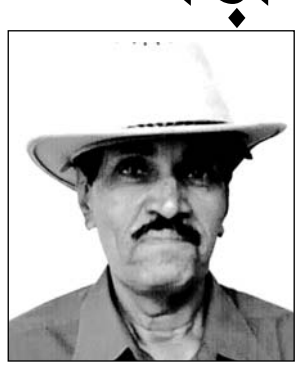

मिश्रीलाल पंवार

जोधपुर की धरा जहां वीरों की भूमि रही है वहीं राजस्थान की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में भी पहचानी जाती है। यहां ऐसे अनेक कलाकार भी हुए, जिन्होंने अपनी प्रतिभा का श्रेष्ठ प्रदर्शन कर मारवाड़ का ही नहीं, राजस्थान का गौरव बढ़ाया। ऐसे ही कलाकारों में 'सज्जन' एक उच्च कोटि के अभिनेता हुए हैं। सज्जन ने हिन्दी फिल्मों में अपनी प्रतिभा के बलबूते अलग ही पहचान बनाई। उन्होंने अधिकतम फिल्मों में चरित्र अभिनेता की भूमिका निभाई। कई बार अपने अभिनय से इतना प्रभाव छोड़ते कि फिल्म के दूसरे कलाकार उनके सामने बौने नजर आते। उन्होंने उस जमाने के सभी निर्माता निर्देशकों के साथ काम किया।

इनका पूरा नाम सज्जन लाल पुरोहित था। सज्जन का जन्म 15 जनवरी 1921 को जोधपुर में पुष्करणा ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इन्होने जोधपुर के जसवंत कॉलेज से ग्रेजुएशन किया था। इनके घरवाले इन्हें वकील बनाना चाहते थे। इसलिए वकालत करने के लिए इन्हें कलकत्ता भेज दिया। कलकत्ता उन दिनों फ़िल्म निर्माण का भी बड़ा केंद्र था। अभिनय का इन्हें बचपन से शौक था। इसलिए वकालत की पढ़ाई करते ये कलकत्ता में फ़िल्मों की तरफ़ आकर्षित हो गए। सज्जन ने फ़िल्मों में काम करना शुरू कर दिया। पहले एक्स्ट्रा कलाकार के तौर पर काम किया । बाद में छोटे-छोटे डायलॉग्स वाले किरदार भी मिलने लगे। वे अभिनेता, नाटककार, कवि और बहुमुखी प्रतिभा के धनी कलाकार थे। जो एक बार उनसे मिलता, उनकी कलाकारी का कायल हो जाता।

कुछ समय बाद वे कलकत्ता छोड़कर बंबई आ गए। बंबई में इनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर किदार शर्मा ने सज्जन को अपना असिस्टेंट बना लिया। उस वक्त राज कपूर भी किदार शर्मा के असिस्टेंट हुआ करते थे। सज्जन को लेखन का भी शौक था। बंबई में सज्जन ने कुछ फ़िल्मों के लिए संवाद लेखन का काम भी किया था। कुछ समय किदार शर्मा के साथ काम करने वाले के बाद सज्जन गजानन जागीरदार के असिस्टेंट बने। कहते हैं उन्हें 35 रुपए महीना की तनख्वाह मिलती थी। वो नौकरी इन्होंने काफ़ी वक्त तक की थी। सज्जन ने 150 से अधिक फिल्मों और टीवी शो में काम किया। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत 1941 में मासूम फिल्म से एक अतिरिक्त कलाकार के रूप में की थी और 1948 में धन्यवाद से मुख्य अभिनेता के रूप में अभिनय किया था। रामानंद सागर की फिल्म आंखें में उनके साथ काम किया था। इस फिल्म के बाद से ही सज्जन की अदाकारी रामानंद सागर के जेहन में बस गई थी। जब रामानंद सागर के मन में की वीं सीरियल विक्रम और बेताल बनाने का ख्याल आया, तब उन्होंने बेताल के किरदार के लिए सज्जन को चुना। सज्जन ने भी देर न करते हुए सीधे हां कह दिया।

सीरियल में विक्रम की भूमिका अरुण गोविल ने निभाई थी, जो आगे चलकर टीवी के श्रीराम बने। वहीं, सज्जन ने बेताल बन दर्शकों के बीच अलग ही छाप छोड़ी। यह भारत का पहला ऐसा शो था, जिसमें टीवी पर स्पेशल इफेक्ट्स दिखाए गए थे। डरावनी शक्ल और बड़ी आंखें और लंबे सफेद बालों वाले बेताल का लुक उस जमाने में लोगों के बीच रोमांच पैदा कर रहा था। बेताल द्वारा बोला गया डायलॉग तू बोला, तो मैं चला जा रहा हूं। मैं तो चला। आज भी लोगों के जेहन में बसा हुआ है।

1985 में प्रसारित होने वाला टीवी शो विक्रम और बेताल पूरे देश का ध्यान खींचने में सफल रहा था। टीवी शो विक्रम और बेताल के साथ एक अन्य शो लेना-देना में काम किया। सज्जन ने अपने करियर की शुरुआत मासूम (1941), चौरंगी (1942) जैसी फिल्मों में बतौर एक्स्ट्रा कलाकार की थी। उन्होंने मीना (1944) के संवाद और दूर चलें (1946) और धन्यवाद (1948) के गीत भी लिखे।

1950-60 के दशक में इस बहुमुखी अभिनेता ने सैयां, रेल का डिब्बा, बहना, शीशा, मालकिन, निर्मोही, कस्तूरी, मेहमान, लगन, गर्ल स्कूल, परिधान, दो दूल्हे, घर-घर में दिवाली, हा-हा-ही-ही-हू-हू, पूनम झांझर, हल्ला- गुल्ला जैसी कई फिल्मों में अभिनय किया।

60 के दशक में इस बहुमुखी अभिनेता ने सैयां, रेल का डिब्बा, बहना, शीशा, मालकिन, निर्मोही, कस्तूरी, मेहमान, लगन, गर्ल स्कूल, परिधान, दो दूल्हे, घर-घर में दिवाली, हा-हा-ही-ही-हू-हू, पूनम झांझर, हल्ला- गुल्ला जैसी कई फिल्मों में अभिनय किया। 1967 में प्रदर्शित हुई हिंदी फिल्म फ़र्ज़ ने उस जमाने में सूपर डूपर रही थी। फ़र्ज़ फ़िल्म में अभिनेता सज्जन ने विलेन का किरदार निभाया था। फिल्म की नायिका बबीता थी। सज्जन ने उनके पिता दामोदर बने। फिल्म की कहानी के अनुसार, दामोदर को एक राष्ट्रद्रोही एक खलनायक के रूप में दिखायागया था। दामोदर भारत को नष्ट करने की साजिश रचने वाले विदेशी एजेंटों के साथ मिला होता है।

इस फिल्म में सज्जन ने अपने अभिनय से लोगों का दिल जीत लिया।

फ़िल्मों में तो ये कोई 50 साल तक सक्रिय थे। मगर टीवी पर इन्होंने एक बार ही काम किया था। और उस एक बार में ही इन्हें लोकप्रिय के शीर्ष तक पहुंचा दिया। टीवी जगत में भी इनका नाम अमर हो गया। फ़िल्मी दुनिया में वे सिर्फ़ सज्जन के नाम से जाने जाते थे। सन 2000 में 17 मई के दिन करीब 79 साल की उम्र में सज्जन का निधन हो गया। उस दिन हर फिल्म दर्शक की आंख नम थी। पूरा जोधपुर शोक में डूबा रहा।

- मिश्रीलाल पंवार,
(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)।

गौतस्कों से गौवंश को बचाने के लिए झारेडा गांव में गौशाला खोली

- **एक करोड़ रुपये की बेशकीमती जमीन गौमाता के नाम कर गौसेवा में जुटा है पूरा परिवार**

अलवर, (निसं)। कहते हैं गौ सेवा से सनातन में बड़ी सेवा नहीं और गौवंश की रक्षा के लिए अनेकों गौशालाएं एवं उन्हें गौतस्करों से बचाने के लिए अनेकों गौ रक्षक दल बने हुए हैं, जो अपनी जान पर खेलकर गोवंश की रक्षा करते हैं। इसी कड़ी में उद्योग नगर में एक नवयुवक ने अपनी करीब एक करोड़ की जमीन को गौ माता के नाम करते हुए एक गौशाला खोल दी, जिस पर वहां के नागरिकों ने युवक का आभार जताया। वहीं उद्योगपतियों व आम नागरिकों ने गौमाता के भरण पोषण का जिम्मा उठाया है। लेकिन इस पुनीत काम को लेकर कुछ लोग जो गौतस्करों के करीबी उन्हें यह गौशाला रास नहीं आ रही और वे उसे अवैध बताते हुए हटवाने की फिराक में है।

अलवर उद्योग नगर एमआईए मेवात क्षेत्र से सटा हुआ है और यहां से गौतस्करी जोरों से होती है, क्योंकि यहां ग्रामीण क्षेत्र होने के कारण लोग अपनी गायों को चारा आदि के अभाव में लावारिस भटकने के लिए छोड़ देते हैं। इन घूमते गौवंशों पर तस्करों की निगाह होती है और वे उन गौवंशों को चोरी कर बूचड़खाने पहुंचा देते हैं। इन सभी को देखते हुए क्षेत्र के लोगों ने एक बैठक कर यहां एक गौशाला बनाने की सोची। इसी विचार को जान कर क्षेत्र के युवा देसूला गांव के बीरू कुमार जो कि पेशे से पत्रकार भी हैं उन्होंने गौमाता की सेवा का बीड़ा उठाते हुए झारेडा में अपनी बेशकीमती जमीन गौमाता के नाम करते हुए यहां श्री श्याम गौशाला सेवा समिति खोल दी। बीरू कुमार की इस पहल का ग्रामीणों ने स्वागत किया और उसे हर प्रकार की सहायता मुहैया कराने का फैसला लिया। यह गौशाला पिछले करीब दो साल से लगातार काम कर रही है यहां करीब दर्जन भर से ज्यादा गाय है, जिनके भरण-पोषण की जिम्मेदारी गौभक्तों द्वारा उठाई जा रही है। इधर लावारिस गौवंश का यहा घूमना बन्द हो जाने से गौ तस्करी से जुड़े कुछ लोगों का खर्चा पानी बंद हो गया तो उन्होंने इस गौशाला को बंद करवाने के लिए गौशाला को अवैध बताते हुए अनेकों जगह इसकी शिकायत कर डाली। इन सभी बातों की जब यहां के सरपंच मंगल सिंह सहित क्षेत्र के मौजिज लोगों को पता चली तो उन्होंने जिला प्रशासन को लिख कर दे दिया कि यह गौशाला क्षेत्र में अच्छा काम कर रही है। यहां किसी प्रकार की लूट-खसोट नहीं है। इस गौशाला पर लोग अपनी मर्जी से चंदा या गायों का खाना देते हैं इस गौशाला का विरोध करने वाले खुद ही भ्रष्ट और गौतस्करों से मिले हुए हैं। गौशाला के समर्थन में सरपंच मंगल सिंह सहित भाजपा नेता जगदीश अटल, रूप सिंह केरवा, राजेन्द्र चौधरी डूमेडा, नरेन्द्र चौधरी, श्याम बिहारी चौधरी, विक्रम चौधरी, अजय प्रजापत, रतीराम झारेडा, हरि सिंह चौधरी, महेश चौधरी जातपुर सहित दर्जनों ग्रामीण शामिल रहे।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 3 दिसम्बर, 2025

मार्गशीर्ष मास, शुक्ल पक्ष, त्रयोदशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2082, भरणी नक्षत्र सायं 6:00 तक, परिद्य योग सायं 4:57 तक, तैतिल करण सायं 7:26 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 11:14 से वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-मेष, मंगल-वृश्चिक, बुध-तुला, गुरू-कर्क, शुक्र-वृश्चिक, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

सर्वार्थ सिद्धि योग सायं 6:00 से सूर्योदय तक है। रवियोग सायं 6:00 तक है। आज भरणी कृत्तिक दीपम (द. भारत में)। आज कृषि शिक्षा दिवस है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:40 तक, शुभ 10:58 से 12:16 तक, चर 2:53 से 4:11 तक, लाभ 4:11 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 7:04, सूर्यास्त 5:29 तक

मेष
व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त कार्य करना पड़ सकता है। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। आज मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है।

मिथुन
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

सिंह
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

कन्या
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

तुला
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं, उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

वृश्चिक
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। आज अनावश्यक धन खर्च हो सकता है।

मकर
घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मीन
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्य योजना बन सकती है। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।